एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 10 (अक्टूबर, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

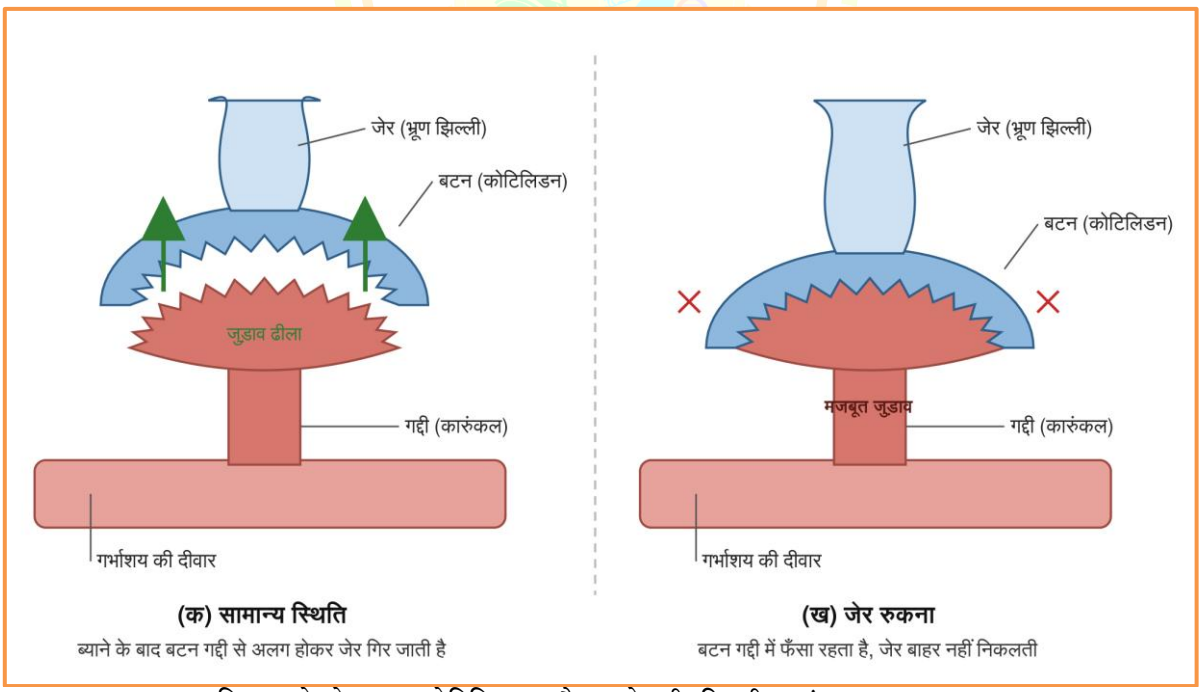
गायों में जेर न गिरना: कारण, पहचान और सही प्रबंधन

*विकास कुमार मीना[1], सन्ताना दास[1], लिएंडर तोइजम[2] एवं परमवीर पालरिया[3]
[1]पीएच.डी. शोधार्थी, पशुधन उत्पादन प्रबंधन प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, भारत
[2]पीएच.डी. शोधार्थी, पशु पोषण प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, भारत
[3]पीएच.डी. शोधार्थी (पशु विज्ञान), संचार केंद्र, केरल कृषि विश्वविद्यालय, मन्नुत्ती, त्रिशूर, केरल, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasggc20@gmail.com

ब्याने के बाद गाय सामान्यतः 3 से 8 घंटे के भीतर जेर (भ्रूण झिल्ली) बाहर निकाल देती है। यदि ब्याने के 24 घंटे बाद भी जेर गर्भाशय में अटकी रहे (कुछ विशेषज्ञ 12 घंटे की सीमा भी मानते हैं), तो इसे जेर रुकना या भ्रूण झिल्ली का प्रतिधारण (Retained Fetal Membranes) कहा जाता है। स्वस्थ झुंडों में यह समस्या लगभग 5 से 15 प्रतिशत गायों में देखी जाती है, जबकि कठिन प्रसव, जुड़वाँ बच्चे या गर्भपात के बाद इसकी दर काफी बढ़ जाती है। जेर रुकने वाली गायों में बाद में गर्भाशय का संक्रमण (मेट्राइटिस, एंडोमेट्राइटिस), कीटोसिस और दूध उत्पादन में गिरावट अधिक होती है, और ऐसी गायें देर से गाभिन होती हैं। इस तरह इसका असर पूरे ब्यांत की आमदनी पर पड़ता है।

जेर क्यों अटकती है

गर्भावस्था में गर्भाशय (बच्चेदानी) की भीतरी दीवार पर उभरी हुई गद्दियाँ (कारुंकल) और जेर के बटन (कोटिलिडन) आपस में जुड़े रहते हैं। ब्याने के समय शरीर की रोग-प्रतिरोधक कोशिकाएँ इस जुड़ाव को "पराया ऊतक" मानकर ढीला करती हैं और गर्भाशय का संकुचन जेर को बाहर धकेलता है। जब यह प्रतिरक्षा प्रक्रिया कमजोर पड़ती है या गर्भाशय ठीक से सिकुड़ नहीं पाता, तब जेर अटक जाती है।



चित्र 1: जेर के बटन (कोटिलिडन) और बच्चेदानी की गद्दी (कारुंकल) का जुड़ाव;
(क) सामान्य स्थिति में बटन अलग हो जाता है, (ख) जेर रुकने में बटन चिपका रहता है

इसके प्रमुख कारण हैं: समय से पहले प्रसव या दवा से कराया गया प्रसव, कठिन प्रसव और सिजेरियन, जुड़वाँ बच्चे, गर्भपात, गर्भाशय का पूरी तरह परिपक्व न होना या उसमें सूजन (एडिमा), ब्रुसेलोसिस जैसे जीवाणु संक्रमण और आईबीआर व गोजातीय वायरल डायरिया (बीवीडी) जैसे वायरल संक्रमण, खून में कैल्शियम की कमी (मिल्क फीवर), विटामिन ई, सेलेनियम और विटामिन ए की कमी, ब्याने से पहले गाय का बहुत मोटा या बहुत कमजोर होना, और गर्मी का तनाव।

पहचान कैसे करें

सबसे स्पष्ट लक्षण यह है कि ब्याने के अगले दिन भी योनि से झिल्ली का हिस्सा लटकता दिखता है, जो कई बार पिछले पैर के हॉक जोड़ तक पहुँच जाता है। दो-तीन दिन बाद झिल्ली का रंग फीका पड़ने लगता है, उसमें सड़न की बदबू आती है और योनि से गंदा स्राव निकलता है। कुछ गायों में झिल्ली पूरी तरह अंदर रह जाती है, जो केवल बदबूदार स्राव या जाँच से पता चलती है। यदि संक्रमण फैल जाए तो बुखार (39.5° से. से अधिक), भूख में कमी, जुगाली कम होना और दूध घटना जैसे लक्षण दिखते हैं।

उपचार: क्या करें और क्या न करें

पशुपालक या अनुभवहीन व्यक्ति द्वारा हाथ डालकर जेर को जबरदस्ती खींचना आज भी गाँवों में आम है। इससे बच्चेदानी की गद्दियाँ फट सकती हैं, खून बहता है, संक्रमण भीतर तक पहुँचता है और गर्भाशय की अपनी सफाई की क्षमता घटती है। इसलिए पशुपालक को स्वयं जेर खींचने का प्रयास नहीं करना चाहिए। बाहर लटकते लंबे हिस्से को योनि द्वार के पास से साफ कैंची से काटा जा सकता है, ताकि वह गंदगी में न घिसटे और गाय उस पर पैर न रखे।

यूरोप और अमेरिका के कई डेयरी फार्मों में जेर को बिना छेड़े छोड़ दिया जाता है, और वह गर्भाशय के संकुचन व अपने भार से धीरे-धीरे बाहर आ जाती है। भारत के गर्म और नम मौसम में अटकी जेर जल्दी सड़ती है और उस पर मक्खियाँ बैठती हैं, इसलिए यहाँ कई पशु चिकित्सक इसे पूरी तरह छोड़ देना ठीक नहीं मानते। भारत में प्रचलित तरीके में पशु चिकित्सक योनि मार्ग से एक हाथ डालकर ढीले पड़ चुके बटनों को गद्दियों से हल्के हाथ से अलग करते हैं, और दूसरे हाथ से जेर का उतना ही हिस्सा धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं जितना बिना जोर लगाए आ जाए। जो हिस्सा आसानी से अलग न हो, उसे वहीं छोड़ दिया जाता है। यह काम केवल प्रशिक्षित पशु चिकित्सक को ही करना चाहिए।

जो जेर अंदर रह जाती है, वह आमतौर पर 2 से 11 दिन में गलकर अपने आप निकल जाती है। इस दौरान सबसे जरूरी काम है ब्याने के बाद 10 दिन तक रोज़ गाय का तापमान नापना और उसकी भूख तथा दूध पर नज़र रखना। बुखार, सुस्ती या भूख की कमी दिखे तो पशु चिकित्सक प्रायः 3 से 5 दिन तक स्ट्रेप्टोपेनिसिलिन या ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन जैसे एंटीबायोटिक के इंजेक्शन और बुखार कम करने की दवा देते हैं। यदि गाय में मिल्क फीवर (कैल्शियम की कमी) के लक्षण भी हों, तो उसका अलग से उपचार कराना चाहिए।

भारत में जेर निकलने के बाद 3 से 5 दिन तक गर्भाशय में एंटीबायोटिक बोलस रखने का भी चलन है, जैसे नाइट्रोफ्यूराजोन व यूरिया, सिप्रोफ्लॉक्सासिन या टेट्रासाइक्लिन के बोलस। नए शोधों में बिना बुखार वाली गायों में नियमित बोलस रखने का लाभ स्पष्ट नहीं हुआ है, इसलिए कौन सी दवा, कितनी मात्रा में और कितने दिन देनी है, यह पशु चिकित्सक ही तय करें। एंटीबायोटिक उपचार के दौरान और उसके बाद दवा पर लिखी निर्धारित अवधि तक दूध बेचने या बछड़े को पिलाने से बचें।

रोकथाम

जेर रुकने की समस्या का असली इलाज ब्याने से पहले के 3 सप्ताह और बाद के 3 सप्ताह (परिवर्तन काल या ट्रांजिशन पीरियड) का अच्छा प्रबंधन है। इस अवधि में गाय को संतुलित आहार और खनिज मिश्रण दें, और शरीर की स्थिति न बहुत मोटी रखें न बहुत पतली। जिन क्षेत्रों की मिट्टी और चारे में सेलेनियम की कमी है, वहाँ पशु चिकित्सक की सलाह से ब्याने से 3-4 सप्ताह पहले विटामिन ई और सेलेनियम दिया जा सकता है। ब्याने का स्थान साफ, सूखा और शांत हो, गर्मी में छाया व पानी की व्यवस्था हो, और कठिन प्रसव में अनुभवहीन व्यक्ति द्वारा खींचतान के बजाय समय पर प्रशिक्षित मदद ली जाए। 4 से 8 माह की बछियों को ब्रुसेलोसिस का टीका लगवाना भी जेर रुकने और गर्भपात के मामलों को कम करता है।